# शीतलहर से फसलों के बचाव के लिए एडवाइजरी जारी की

**कानपुर।** सीएसए के अपर निदेशक प्रसार डॉ. एके सिंह ने पाले/ शीतलहर से फसलों के बचाव हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि शीतलहर एवं पाले से सर्दी के मौसम में फसलों को नुकसान होने की संभावना रहती है। उन्होंने बताया कि पाले के प्रभाव से पौधों की पत्तियां एवं फूल झुलस कर झड़ जाते हैं। तथा अध पके फल सिकुड़ जाते हैं फलियों एवं बालियों में बन रहे दाने भी सिकुड़ जाते हैं। जिससे फसल उत्पादन पर प्रभाव पड़ता है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि जब पाला पड़ने की संभावना हो तब फसलों में हल्की सिंचाई कर देनी चाहिए।जिससे मृदा का तापमान कम नहीं होता है। और फसलों को पाले से होने वाले नुकसान से बचाया जा सकता है। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी एवं मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि जिन दिनों में पाला पड़ने की संभावना हो उन दिनों किसान भाई फसलों पर घुलनशील गंधक 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में

# सीएसए ने फसलो पर ठंड के असर को बचाने के लिए गाइड लाइन जारी किया

**कानपुर** । चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अपर निदेशक प्रसार डॉक्टर ए के सिंह ने पाले/ शीतलहर से फसलों के बचाव हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि शीतलहर एवं पाले से सर्दी के मौसम में फसलों को नुकसान होने की संभावना रहती है। उन्होंने बताया कि पाले के प्रभाव से पौधों की पत्तियां एवं फूल झुलस कर झड़ जाते हैं। तथा अध पके फल सिकुड़ जाते हैं फलियों एवं बालियों में बन रहे दाने भी सिकुड़ जाते हैं। जिससे फसल उत्पादन पर प्रभाव पड़ता है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि जब पाला पड़ने की संभावना हो तब फसलों में हल्की सिंचाई कर देनी चाहिए।जिससे मृदा का तापमान कम नहीं होता है। और फसलों को पाले से होने वाले नुकसान से बचाया जा सकता है। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी एवं मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि जिन दिनों में पाला पड़ने की संभावना हो उन दिनों किसान भाई फसलों पर घुलनशील गंधक 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें छिड़काव का असर 2 सप्ताह तक रहता है।इस दौरान यदि शीतलहर या पाले की संभावना लगातार बनी रहती है तो 15-15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करते रहे। डॉक्टर खान ने बताया कि सरसों, गेहूं, चना, आलू,मटर जैसी फसलों को पाले/ शीतलहर से बचाने में गंधक का छिड़काव करने से न केवल पाले/ शीत लहर से बचाव होता है बल्कि पौधों में लौह तत्व की जैविक एवं रासायनिक सक्रियता बढ़ जाती है। जो पौधों में रोगरोधिता बढ़ाने में एवं फसल को जल्दी पकाने में सहायक होती है।

हिन्दी दैनिक समाचार

RNI No. UPHIN/2007/23059

# विशाल प्रदेश

प्रधान सम्पादक- मोहम्मद नासिर

कानपुर का लोकप्रिय समाचार पत्र

वर्ष : 14 | अंक : 338 | शनिवार 09 जनवरी 2021 | पृष्ठ : 8 | मूल्य : 2.00

## चंद्रशेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय अपर निदेशक प्रसार ने पाले, शीतलहर से फसलों के बचाव हेतु की एडवाइजरी जारी

शाहिद शेख सिद्दीकी

कानपुर( विशाल प्रदेश)चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अपर निदेशक प्रसार डॉक्टर ए0के0 सिंह ने पाले, शीतलहर से फसलों के बचाव हेतु एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि शीतलहर एवं पाले से सर्दी के मौसम में फसलों को नुकसान होने की संभावना रहती है उन्होंने बताया कि पाले के प्रभाव से पौधों की पत्तियां एवं फूल झुलस कर झड़ जाते हैं तथा अध पके फल सिकुड़ जाते हैं फलियों एवं बालियों में बन रहे दाने भी सिकुड़ जाते हैं जिससे फसल उत्पादन पर प्रभाव पड़ता है उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि जब पाला पड़ने की संभावना हो

तब फसलों में हल्की सिंचाई कर देनी चाहिए जिससे मृदा का तापमान कम नहीं होता है और फसलों को पाले से होने वाले नुकसान से बचाया जा सकता है विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी एवं मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि जिन दिनों में पाला पड़ने की संभावना हो उन दिनों किसान भाई फसलों पर घुलनशील गंधक 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें छिड़काव का असर 2 सप्ताह तक रहता है इस दौरान यदि शीतलहर या पाले की संभावना लगातार बनी रहती है तो 15-15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करते रहे डॉक्टर खान ने बताया कि सरसों, गेहूं, चना, आलू,मटर जैसी फसलों को पाले, शीतलहर से बचाने में गंधक का छिड़काव करने से न केवल पाले, शीत लहर से बचाव होता है बल्कि पौधों में लौह तत्व की जैविक एवं रासायनिक सक्रियता बढ़ जाती है जो पौधों में रोगरोधिता बढ़ाने में एवं फसल को जल्दी पकाने में सहायक होती है

# हल्की सिंचाई करके पाले से होने वाले नुकसान से बचा सकते हैं फसलों को

जन एक्सप्रेस संवाददाता

09/01/2021

**कानपुर नगर।** सर्दी के मौसम में फसलों को शीतलहर एवं पाले से नुकसान होने की संभावना रहती है। पाले के प्रभाव से पौधों की पत्तियों और फूलों के झुलस कर झड़ने के साथ अधपके फल, फलियों एवं बालियों में बन रहे दाने सिकुड़ जाते हैं। जिससे फसल उत्पादन पर प्रभाव पड़ता है। यह बात सीएसएयू के अपर निदेशक प्रसार डॉ. ए. के. सिंह ने शुक्रवार को पाले/ शीतलहर से फसलों के बचाव के लिए एडवाइजरी जारी करते हुए कही। उन्होंने किसानों को पाला पड़ने की संभावना होने पर फसलों में हल्की सिंचाई करने की सलाह दी जिससे फसलों को पाले से होने वाले नुकसान से बचाया जा सकता है। मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने किसानों को बताया कि पाला पड़ने की संभावना होने पर फसलों पर दो ग्राम घुलनशील गंधक प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर सकते है इसका प्रभाव फसलों मे 2 सप्ताह तक रहता है तथा शीतलहर और पाले की संभावना लगातार होने पर 15-15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिए। डॉक्टर खान ने बताया कि सरसों, गेहूं, चना, आलू, मटर जैसी फसलों को पाले और शीतलहर से बचाने में गंधक का छिड़काव करने से न केवल पाले/शीतलहर से बचाव होता है बल्कि पौधों में लौह तत्व की जैविक एवं रासायनिक सक्रियता बढ़ जाती है।

# फसलों को पाले से बचाने हेतु एडवाइजरी जारी

09/01/2021

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद .षि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अपर निदेशक प्रसार डॉक्टर ए के सिंह ने पालेध् शीतलहर से फसलों के बचाव हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि शीतलहर एवं पाले से सर्दी के मौसम में फसलों को नुकसान होने की संभावना रहती है। उन्होंने बताया कि पाले के प्रभाव से पौधों की पत्तियां एवं फूल झुलस कर झड़ जाते हैं। तथा अध पके फल सिकुड़ जाते हैं फलियों एवं बालियों में बन रहे दाने भी सिकुड़ जाते हैं। जिससे फसल उत्पादन पर प्रभाव पड़ता है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि जब पाला पड़ने की संभावना हो तब फसलों में हल्की सिंचाई कर देनी चाहिए।जिससे मृदा का तापमान कम नहीं होता है। और फसलों को पाले से होने वाले नुकसान से बचाया जा सकता है। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी एवं मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि जिन दिनों में पाला पड़ने की संभावना हो उन दिनों किसान भाई फसलों पर घुलनशील गंधक 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें छिड़काव का असर 2 सप्ताह तक रहता है।इस दौरान यदि शीतलहर या पाले की संभावना लगातार बनी रहती है तो 15–15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करते रहे। डॉक्टर खान ने बताया कि सरसों, गेहूं, चना, आलू,मटर जैसी फसलों को पालेध् शीतलहर से बचाने में गंधक का छिड़काव करने से न केवल पालेध् शीत लहर से बचाव होता है बल्कि पौधों में लौह तत्व की जैविक एवं रासायनिक सक्रियता बढ़ जाती है। जो पौधों में रोगरोधिता बढ़ाने में एवं फसल को जल्दी पकाने में सहायक होती

# शीतलहर से फसलों के बचाव के लिए एडवाइजरी जारी

09/01/2021

**कानपुर स्पष्ट आवाज।** सीएसए के अपर निदेशक प्रसार डॉ. ए के सिंह ने पाले/ शीतलहर से फसलों के बचाव हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि शीतलहर एवं पाले से सर्दी के मौसम में फसलों को नुकसान होने की संभावना रहती है। उन्होंने बताया कि पाले के प्रभाव से पौधों की पत्तियां एवं फूल झुलस कर झड़ जाते हैं। तथा अध पके फल सिकुड़ जाते हैं फलियों एवं बालियों में बन रहे दाने भी सिकुड़ जाते हैं। जिससे फसल उत्पादन पर प्रभाव पड़ता है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि जब पाला पडने की संभावना हो तब फसलों में हल्की सिंचाई कर देनी चाहिए।जिससे मृदा का तापमान कम नहीं होता है। और फसलों को पाले से होने वाले नुकसान से बचाया जा सकता है। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी एवं मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि जिन दिनों में पाला पडने की संभावना हो उन दिनों किसान भाई फसलों पर घुलनशील गंधक 2 ग्राम प्रति

लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें छिड़काव का असर 2 सप्ताह तक रहता है।इस दौरान यदि शीतलहर या पाले की संभावना लगातार बनी रहती है तो 15-15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करते रहे। डॉक्टर खान ने बताया कि सरसों, गेहूं, चना, आलू,मटर जैसी फसलों को पाले/ शीतलहर से बचाने में गंधक का छिड़काव करने से न केवल पाले/ शीत लहर से बचाव होता है बल्कि पौधों में लौह तत्व की जैविक एवं रासायनिक सक्रियता बढ़ जाती है। जो पौधों में रोगरोधिता बढ़ाने में एवं फसल को जल्दी पकाने में सहायक होती है।